भारत और यूरोपीय संघ: विभाजित दुनिया में एक

UPSC प्रासंगिकता - GS पेपर II - अंतर्राष्ट्रीय संबंध

चर्चा में क्यों?

यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष, उर्सुला वॉन डेर लेयेन, और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष, एंटोनियो कोस्टा, भारत के **77वें गणतंत्र दिवस (26 जनवरी, 2026)** पर मुख्य अतिथि के रूप में भारत आने वाले हैं और 16वें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन की सह-अध्यक्षता करेंगे। यह उच्च-स्तरीय जुड़ाव वैश्विक भू-राजनीतिक उथल-पुथल, पारंपरिक गठबंधनों में बढ़ते अविश्वास और रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy) पर नए सिरे से जोर देने के बीच हो रहा है।

पृष्ठभूमि: बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत-ईयू संबंध

भारत-ईयू संबंध साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, बहुपक्षवाद और नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता पर टिके हुए हैं। हालांकि, दशकों तक, अलग-अलग भू-राजनीतिक प्राथमिकताओं और अमेरिका पर आपसी ध्यान केंद्रित होने के कारण यह साझेदारी अपनी क्षमता से कम रही।

9235313184, 9235440806

हाल के वैश्विक घटनाक्रमों ने इस समीकरण को बदल दिया है:

- अमेरिकी विदेश नीति की अनिश्चितता।
- रूस-यूक्रेन संघर्ष।
- हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता।
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं (Supply Chains) में व्यवधान। इन बदलावों ने विविध साझेदारियों की आवश्यकता पैदा कर दी है, जिससे भारत और ईयू एक-दूसरे के करीब आए हैं।

भारत-ईयू संबंधों को क्या परिभाषित करता है?

1. साझा मूल्य और रणनीतिक अभिसरण (Convergence)

- लोकतंत्र, बहुलवाद और बहुपक्षीय संस्थानों के प्रति प्रतिबद्धता।

- एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का समर्थन।
- बाहरी हस्तक्षेप के बिना संप्रभु निर्णय लेने पर जोर। यह अभिसरण सामरिक मतभेदों के बावजूद साझेदारी को लचीला बनाता है।

2. आर्थिक तालमेल और व्यापार संबंध भारत और यूरोपीय संघ स्वाभाविक आर्थिक भागीदार हैं:

- **द्विपक्षीय वस्तु व्यापार (2023-24):** 137.41 बिलियन अमेरिकी डॉलर।
- **सेवाओं का व्यापार (2023):** 51.45 बिलियन अमेरिकी डॉलर।
- ईयू वस्तुओं के व्यापार में भारत का **सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** है।

IAS-PCS Institute

FDI आयाम:

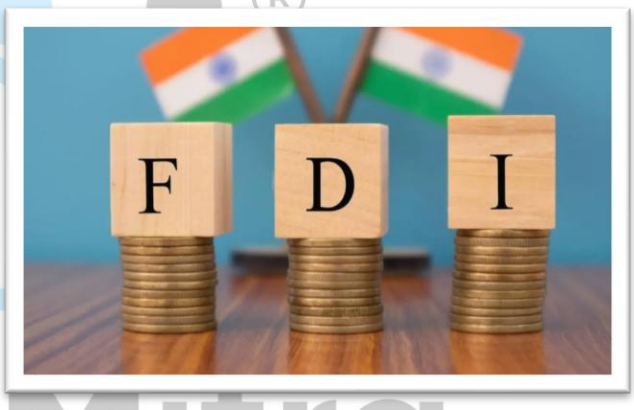

- भारत में कुल एफडीआई अंतर्वाह (FDI Inflows) का लगभग 17% ईयू से आता है।
- विनिर्माण, सेवाओं और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रोजगार सृजन।

प्रमुख विकास क्षेत्र: ग्रीन टेक्नोलॉजी, फार्मास्यूटिकल्स, कपड़ा, इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर, डिजिटल और आईटी सेवाएं।

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारत-ईयू मुक्त व्यापार समझौता (FTA): एक भू-राजनीतिक बीमा पॉलिसी

2007 से चल रही एफटीए वार्ता अब राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो गई है।

- **संभावित लाभ:** भारतीय कपड़ा, फार्मा और आईटी सेवाओं के लिए बाजार पहुंच; यूरोपीय कंपनियों के लिए भारत के बढ़ते उपभोक्ता बाजार तक पहुंच; चीन से दूर आपूर्ति श्रृंखला का विविधीकरण।
- **प्रमुख बाधा - कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म (CBAM):** यह स्टील, सीमेंट, उर्वरक जैसे भारतीय निर्यात पर 20-35% प्रभावी कार्बन लागत लगाता है। भारत इसे जलवायु समानता को कमजोर करने वाला एक 'गैर-शुल्क बाधा' मानता है।

समुद्री सुरक्षा और रक्षा सहयोग

- **समुद्री आयाम:** हिंद महासागर यूरोपीय व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है। ईयू की ESIWA पहल एशिया के साथ सुरक्षा सहयोग को बढ़ाती है।

- **रक्षा जुड़ाव:** गिनी की खाड़ी (2023) में पहला भारत-ईयू संयुक्त नौसैनिक अभ्यास आयोजित किया गया।
- **भारत के लिए अवसर:** 'मेक इन इंडिया' के तहत सह-उत्पादन और यूरोपीय रक्षा तकनीक तक पहुंच।

प्रौद्योगिकी और नवाचार सहयोग

1. **संस्थागत ढांचा:** ईयू-भारत व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (TTC)।
2. **सहयोग के क्षेत्र:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), क्वांटम कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा तकनीक, अंतरिक्ष और जैव प्रौद्योगिकी।

भारत-ईयू संबंधों में प्रमुख चुनौतियां

1. **भू-राजनीतिक मतभेद:** भारत की रणनीतिक स्वायत्तता बनाम ईयू का गठबंधन-संचालित दृष्टिकोण; रूस-यूक्रेन युद्ध पर अलग-अलग रुख।
2. **व्यापार और नियामक बाधाएं:** ईयू के सख्त बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) मानदंड बनाम भारत का जेनेरिक फार्मा मॉडल; श्रम और पर्यावरणीय शर्तें।
3. **संरचनात्मक बाधाएं:** ईयू सदस्य देशों के बीच अलग-अलग विदेश नीति प्राथमिकताएं।

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारत-ईयू संबंधों को मजबूत करना क्यों आवश्यक है?

- **अधिनायकवादी दबावों का मुकाबला:** साझा लोकतांत्रिक असुरक्षाओं और विस्तारवाद से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करना।
- **आर्थिक लचीलापन:** चीन पर अत्यधिक निर्भरता कम करना और विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला बनाना।
- **जलवायु नेतृत्व:** अक्षय ऊर्जा और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में संयुक्त निवेश।

आगे की राह

1. **समानता के साथ एफटीए को अंतिम रूप देना:** CBAM चिंताओं को दूर करना और विकास की वास्तविकताओं के साथ जलवायु महत्वाकांक्षा को संतुलित करना।
2. **व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद का लाभ उठाना:** तकनीकी मानकों को संरेखित करना और नवाचार में तेजी लाना।
3. **रक्षा सहयोग को गहरा करना:** रक्षा सह-उत्पादन और समुद्री सुरक्षा सहयोग बढ़ाना।
4. **रणनीतिक आर्थिक साझेदारी का विस्तार:** महत्वपूर्ण कच्चे माल, ग्रीन हाइड्रोजन और सेमीकंडक्टर में संयुक्त उद्यम।

IAS-PCS Institute

निष्कर्ष

अनिश्चितता और शक्ति परिवर्तन से घिरी वैश्विक व्यवस्था में, भारत-ईयू साझेदारी व्यावहारिक बहुपक्षवाद (Pragmatic Multilateralism) के लिए एक विश्वसनीय खाका प्रदान करती है। यदि दोनों पक्ष रणनीतिक हिचकिचाहट से आगे बढ़ते हैं, तो यह साझेदारी एक लचीली, संप्रभु और न्यायसंगत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को आकार देने में मदद कर सकती है।

UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न (GS पेपर II - अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

प्रश्न: "तेजी से खंडित होती वैश्विक व्यवस्था में, भारत-यूरोपीय संघ साझेदारी रणनीतिक स्वायत्तता और नियम-आधारित बहुपक्षवाद के स्तंभ के रूप में उभरने की क्षमता रखती है।" भारत-ईयू संबंधों के उभरते आयामों, गहरे सहयोग को बाधित करने वाली प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजिए और इस साझेदारी की पूर्ण क्षमता का लाभ उठाने के लिए आगे का मार्ग सुझाइए। (150-200 शब्द)

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806